उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डा. एस. पी. यादव
157/173 शेषपुर, निकट रोडवेज,जौनपुर

सुमन कुमारी
शोधार्थी, वाई.बी.एन. विश्वविद्यालय, नामकुम, राँची

१.प्रस्तावना

राष्ट्र के विकास हेतु आवश्यक रूप से शिक्षा के प्रचार–प्रसार की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह ग्रामीण परिवेश का हो अथवा नगरीय, दोनों को जब तक समान रूप से शिक्षा के अवसर न प्राप्त हो तब तक कोई भी राष्ट्र विकसित नहीं हो सकता। मानव, समाज में जन्म लेकर अपनी परम्परा, संस्कृति एवं मान्यताओं के अनुसार अपना विकास करता है। प्रत्येक व्यक्ति में अन्तर्निहित क्षमताएँ उसके सम्पूर्ण विकास में सन्निहित रहती है वह स्वयं को वातावरण में समायोजित करते हुए अपनी रूचि के अनुकूल अपने लक्ष्य एवं उद्देश्यों की पुर्ति हेतू शिक्षा व साधन मिलने पर ही संभव हो पाता है।

विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को अध्यापक बिना किसी भेदभाव या पक्षपात के शिक्षा प्रदान करता है परन्तु विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर असमान होता है। इनमें कुछ विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर उच्च तथा कुछ विद्यार्थियों का शैक्षिक स्तर निम्न होता है। प्रायः विद्यार्थियों के पाठ्वस्तु/विषयवस्तु ग्रहण करने एवं अधिगम की गति की क्षमता में असमानता होती है जिसके कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक स्तर, उपलब्धि स्तर से भिन्न होती है।

उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करनेवाले विद्यार्थी अपनी प्रखर बुद्धिलब्धि के कारण सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न होते है तथा अपनी व्यक्तिगत भिन्नता के कारण वह विशिष्ट बालक कहे जाते हैं अर्थात् ऐसे विद्यार्थी अनेक ऐसे विशिष्ठ कार्य करते है जो उनकी आयु की अपेक्षा अधिक कठिन होते हैं। उच्च शैक्षिक उपलब्धि अथवा उपलब्धि प्राप्त करने के संदर्भ में **"टरमैन"** ने लिखा है कि उच्च उपलब्धि प्राप्त करनेवाले बालकों का शारीरिक गठन व्यक्तित्व लक्षण रूचियों की बहुरूपता शैक्षिक उपलब्धि सामान्य बालकों से श्रेष्ठ होती है। शिक्षा के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति विद्यालयों में एक निश्चित पाठय्चार्य/पाठय्क्रम द्वारा की जाती है। शिक्षक, उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से समयानुसार यह जानना सुनिश्चित करता है कि कक्षा में दिये गये ज्ञान को विद्यार्थियों ने कहाँ तक ग्रहण कर लिया है तथा शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में कहाँ तक सफल हुआ है। शिक्षक, परीक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना होता है जिसे व्यक्ति अभिप्रेरणा के माध्यम से अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास करता है अर्थात् मानव व्यवहार कुछ प्रेरकों द्वारा पथ प्रदर्शित, रूपान्तरित एवं परिचालित होता रहता है जो उसे विभिन्न परिस्थितियों में कार्य अथवा व्यवहार करने की अभिप्रेरणा प्रदान करता है। हमारे अनेक सामाजिक कार्य हमारे शारीरिक अभिप्रेरकों पर निर्भर रहते हैं। शारीरिक अथवा जैविक अभिप्रेरक सामाजिक वातावरण के प्रभाव के कारण सामाजिक अभिप्रेरकों के रूप में विस्तृत होने के साथ विकसित होते हैं।

२.अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा संबंधी कोई भी योजना सफल होने के लिए आवश्यक है कि उससे समाज के सभी वर्ग अधिक लाभान्वित हो एवं वास्तविक तथ्यों पर आधारित हो अर्थात् शिक्षा द्वारा ऐसे समाज का निर्माण हो सकता है जिसमें किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना एक समान स्तर की सोच तथा समान जीवन–यापन संभव हो । समाज का कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी भी वर्ग या जाति का हो शिक्षा प्रणाली उसके लिए एक आवश्यक अंग है। समानता का अधिकार में सभी वर्ग एवं जाति के लिए एक समान शिक्षा का अवसर होना चाहिए। अतः जब शोधार्थी ने शोध अध्ययन के विषय में अपने अनुभव, रूचि के कारण इस शीर्षक पर विचार किया तो इस शीर्षक को समय के अनुरूप अधिक उपयुक्त पाया और इस शीर्षक को ही अपने शोध अध्ययन हेतु उपयुक्त पाया।

३.अध्ययन के उद्देश्य

शोध अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित रूप से निर्धारित किये गये हैं।

(i) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

(ii) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।

(iii) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(iv)उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

४.अध्ययन की परिकल्पना

किसी की समस्या का समाधान का पूर्वचिन्तन करना ही परिकल्पना है। शोध क्रिया परिकल्पना के बिना उद्देश्यहीन है। शोघार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

(i)उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(i)उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

५.शोध अध्ययन विधि

किसी भी शोध अध्ययन के लिए अनुसंधानकर्त्ता को अध्ययन की विधि को निश्चित करना होता है। किसी भी समस्या की प्रकृति के आधार पर शोधकार्य, शोध विधि द्वारा परिचालित होता है। उपयुक्त शोध विधि समस्या की प्रकुति एवं उद्देश्य के अनुरूप किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अतः समस्या की प्रकृति और स्वरूप को देखते हुए शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है जो वर्तमान समय में अधिक प्रासंगिक और उपयुक्त है।

६.जनसंख्या

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में राँची जिला के उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में अध्ययन करने वाले छात्र–छात्राओं को जनसंख्या के रूप में चयनित किया है।

७.न्यादर्श

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन में राँची जिले में संचालित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है।

८.प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत् शोध अध्ययन में शोधार्थी ने राँची जिला में संचालित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मापन के लिए स्वनिर्मित परीक्षण मापनी का प्रयोग किया है जो विभन्न आयामों पर मापन करता है। प्रयुक्त स्वनिर्मित परीक्षण मापनी की विश्वसनीयता उच्च स्तर की है जिसके कारण प्राप्त निष्कर्ष अधिक उपयुक्त है।

९.सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्तुत् शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा आकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान (M), मानक विचलन (SD), मानक त्रुटि (σD) एवं क्रान्तिक अनुपात (CR) का प्रयोग किया गया है।

१०.आकड़ों का विश्लेशण एवं व्याख्या

सारणी 1- उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांको के मध्यमानों की तुलना के लिए क्रान्तिक अनुपात

समूह	N	M	S	D = M,- M_2	σD	CR	DF	Result Significance Level	
								0.05	0.01
छात्र	150	100.62	7.05	0.071	1.06	0.66	298	असार्थक	असार्थक
छात्रा	150	101.41	10.92						

अतः उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 100.62, 101.41 एवं 7.05, 10.92 है। इनके मध्यमानों के अन्तर ही मानक त्रुटि 1.06 है एवं क्रान्तिक अनुपात का मान 0.66 है जो मुक्तांश 298 के 0.05 एवं 0.01 के सार्थक मान स्तर पर सारणी मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है स्वीकृत हो जाती है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के कुल छात्र एवं छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं है। इसका कारण यह है कि उच्च माध्यमिक स्तर के अधिकांश छात्र एवं छात्राएँ लगभग एक समान रूप से अभिप्रेरित होते रहते हैं तथा उच्च माध्यमिक स्तर के अभिभावकों में बालक–बालिकाओं के प्रति विभेद कम होने के साथ पुत्र–पुत्री दोनों को सामान्य स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराते हैं जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होने के साथ–साथ उपलब्धि अभिप्रेरणा में भी वृद्धि होती है।

सारणी 2- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं भौक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन की सारणी

कम. सं.	परीक्षण	छात्र संख्या N	प्राप्तांको का मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)
01	उपलब्धि अभिप्रेरणा	150	93.76	7.69
02	शैक्षिक उपलब्धि	150	29.83	5.31

अतः उपयुक्त तालिका से स्पस्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन के मान क्रमशः 93.76 एवं 29.83 तथा 7.69 एवं 5.31 ळें

सारणी 3- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमानों की तुलना के लिए क्रान्तिक अनुपात सारणी

समूह	N	M	S	D=M,- M_2	σD	CR	DF	Result Significance Level	
								0.05	0.01
छात्र	150	30.83	5.11	2.73	0.61	4.47	298	सार्थक	सार्थक
छात्रा	150	32.97	5.60						

अतः उपयुक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 30.83, 32.97 और 5.11, 5.60 है। इनके मध्यमानों के अंतर की मानक त्रुटि 0.61 है एवं क्रान्तिक अनुपात (CR) 4.47 है। जो मुक्तांश 298 के 0.05 एवं 0.01 के सार्थकता मान स्तर पर सारणी के मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं हैं अस्वीकृत हो जाती है। अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है इस अंतर का कारण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का माध्य छात्रों की अपेक्षा उच्च होना है।

११.शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के स्तर के मापन एवं उसमें वृद्धि के दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

1. विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार का अध्ययन किया जा सकता हैं।
2. विद्यार्थियों के अभिप्रेरणात्मक व्यवहार का अध्ययन करने में और उनके प्रेरकत्व का अध्ययन किया जा सकता है।
3. विद्यार्थियों की रूचि योग्यता, कौशल, लक्ष्य निर्धारण आदि के अध्ययन द्वारा उनके भविष्य का अनुमान लगाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, एस. पी., गुप्ता अल्का – उच्च शिक्षा मनोविज्ञान शारदा, प्रस्तक भवन, इलाहबाद
2. गुप्ता, एस. पी., गुप्ता – सांख्यकीय विधियाँ, शारदा, प्रस्तक भवन, इलाहबाद
3. माथुर, एस. एस. – शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा
4. राय, पारशनाथ – अनुसंधान परिचय, विनोद प्रकाशन आगरा : 2002
5. सारस्वत, मालती – शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ, 2003
6. Butch, M.B. (1972-78). Seconda Survey of Research in Education, Vol.2, NCERT, New Delhi.